

यद्युपचारायक्षर्त्तरापरम्भेनिमृतामात्रं प्राप्तविनामाप?
यदिगुपामात्रमहोरणमन्तरोष-ग्रन्थयाज्ञो तत्क्षेत्रं ग्राम
उभरित्वा शाश्वतराम-उद्देश्यप्रदृशमिति कलाकृतिं लिखेत्
अठिनावप्रस्त्रामित्यैर्तत्त्वामित्यप्रमाणरात्राच्छामरीपा
जयापेक्ष्यमाधित्वस्तात्त्वेतिपत्रित्वामित्यजित्त
स्वात्मद्विलक्षणं कुमारामित्यादित्वामित्यमित्य
स्मृतिमित्यमित्यरात्रामित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
तपारलुभ्यं रात्रमित्यत्त्वामित्यमित्यमित्य
उम्बुद्धेनित्यामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
तत्त्वेनित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
एतत्त्वेनित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
वृष्टिरात्रामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
उपत्राण्डुमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
तत्त्वात्मामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
प्रयामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
स्वात्मप्रदाणामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
दृष्टिमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
इत्यामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
दृष्टिमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
उपत्राण्डुमित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य
एतत्त्वामित्यमित्यमित्यमित्यमित्यमित्य

॥ अंरवउसाचधानअसावे ॥ दुःश्वीतकदापिनसावे ॥ तजावेजाकरि
॥ तबसावे ॥ येकातस्थळि ॥ १ ॥ काहीउपस्थितिसांडावी ॥ काहीसो
॥ म्यताधरावि ॥ चिंतालागविपरावी ॥ अंतर्यामि ॥ २ ॥ मागिल
⑨ ॥ अपराधक्षमावे ॥ कारभारिहतिधरावे ॥ सुखिकरेनिसांडावे ॥
॥ कामाकडे ॥ ३ ॥ पाटतिलतुंबनियेना ॥ तरिमगपाणिचालेना ॥
॥ तेसेजेनाचामना ॥ कठलेपाहिजे ॥ ४ ॥ जनाचाप्रवाहचालिला ॥
॥ त्यणजेकार्यभागआटोपिला ॥ जेनठाईराईतुंबला ॥ मणजेखो
॥ ५ ॥ श्रेष्ठीजेजेभिकविले ॥ त्या साठिभाडतबैसले ॥ तरि

(10) ॥ मग जाणा वे फावले ॥ गलि मासि ॥ ६१ ॥ ऐसे सहसा करु
॥ नये ॥ दृवे भाडता तिसरि याजे ये ॥ धीरधर निमहका
॥ ये ॥ समजोनिकरावे ॥ ७। आधिचपाडि लिधास्ति ॥ अ
॥ गजे कार्यभाग डोयनास्ति ॥ याकारणे समस्ति ॥ बुधी
॥ शोधावि ॥ टीरा जिराखता जेग ॥ मग कायभाग निलंगव
(11) ॥ ग ॥ ऐसे जाणोनि सांग ॥ समाधाने राखाविं ॥ ९ ॥ सकबले
॥ कयेककरावे ॥ गलि मलोये नियकावे ॥ येषेकरिताकि
॥ लिफावे ॥ दीर्घ तरी ॥ १० ॥ आधिगाजवावे तडखे ॥
॥ मग भुमेड़ लधाके ॥ ऐसेन होताधके राज्यासाहो
॥ ११ ॥ ११ ॥ समय प्रसंग वोळखावा ॥ राग नीपटोनि सा
॥ डवा ॥ आलातरिक घोने दावा ॥ १२ ॥ जनामध्ये ॥ १२ ॥
॥ राज्यामध्ये सकलके ॥ सलुभि गोदु निकरावोका
॥ गेकावे मना मध्यधाक ॥ उपजो विनये ॥ १३ ॥ बुहुतले
॥ कमेलवावे ॥ गेकवि रावे ॥ कष्टकरोनिध
(12) ॥ सरावे ॥ १४ ॥ राज्यामध्ये जतनकरा
॥ वे ॥ पुदेजाणी कमळवावे ॥ माडा राष्ट्रराज्येनकरावे
॥ १५ ॥
॥ गोकिठी मंतधरावि ॥ शति चितरवारकरावि ॥ चढ
॥ लिवाटलिपदवि ॥ पावालवेपे ॥ १६ ॥ सिवराज्यासआ
॥ ठवावे ॥ जिविवत्रणासमनमाडवे ॥ येहर्गोकिपहु
॥ रलोकितरावे ॥ कीतिरुप ॥ १७ ॥ सिवराज्याचेआठवा
॥ वेरुपै ॥ लीविराज्याचाआठवावासाक्षेप ॥ सीवराज्या
॥ १८ ॥
॥ चाआठवावाम्रताप ॥ १९ ॥ मेडवि ॥ १९ ॥ सिवराज्याचेके
(13) ॥ सेबोलणे ॥ सिवराज्याचेके सेबालणे ॥ सिवराज्या
॥ चेसलगिदेपे ॥ के सिआहे ॥ २० ॥ सकलसुखाचा
॥ याग ॥ कठरोनिसाधिजेतोयोगमराज्येसाधप्याचि
॥ लगवग ॥ कौसि केलगी ॥ २१ ॥ याहुनिकरावेविशेष
॥ तरिज्जनावेपुरुष ॥ याहुपरिआलाविशेषकायत्था

॥ हंवे ॥ २७ ॥ अम् ॥ ॥ ए ॥ ॥ ए ॥ ॥ ए ॥

(19) यन्मित्रैर्विषयाद्येवाप्नते पुनर्जागर्त्तु भवेत्

— उत्तराधिकारीया विजयनरस च चिनादेश गदा

ଉଦ୍‌ବ୍ୟାକୀ ପିତାଙ୍କା ଜାରାଟ ବ୍ୟାରଯାନ୍ତା ମିଥ୍ୟା ମରାଗା ଉପରେ

ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣା ଯାତର ପାଠୀରେ ଲୋକଙ୍କିମାତ୍ରାଙ୍କ ନାହାନ୍ତିରୁ ।

କାନ୍ତପଥାରୁଲେଖିତକଣ୍ଠବିଜ୍ଞାନାମାନିକାନ୍ତପଥ

ମହାଦ୍ୱିତୀ ଦାଶ୍ରମାର୍ଥାନ୍ତ କାଣ୍ଡିକୁ ଘାସନାମରେ ନ

~~स्यामूर्गो जारी श्रीस्यति रेद्वै मन्त्रं प्रवृत्तम् अथानाम्~~

जायदरिम्भजन्त्येन्नतोऽस्याम् जायिल्लिङ्गु दीक्षा

यद्यपि अन्त अप्य न समाप्तम् इति भस्मानि दर्शना

३५४ अहम् राम् तत्प्रस्तुतिः देवाद्यत्पानात् अप्यतः

~~84 विजयार्थी नामक विजयार्थी नामक विजयार्थी नामक विजयार्थी नामक~~

~~ମର୍ମଧେନୁ କାରା ଶାଖି ପରମପାତ୍ର ଗ୍ରହଣ କରିଛା~~

१६ विज्ञानवत्तम् रायनपद्मनभी

प्रह्लादनाथ नाथ ॥ जागि सावधारण धनवल

उत्तराधिकारी अनुभव एवं उत्तराधिकारी

उद्धिगतेभूली इमादगियज्ञानी वाम प्रभावप्रयोग

ରେଧୀରେ ତାମ୍ରାଦିନୀରୁ ଯାଏନ୍ତି କିମ୍ବା କିମ୍ବା

रयोनेमध्ये उत्तमपद्धतीकालीनरामरात्रयविवरणीच्युम

~~उक्तं ग्रन्थं विनाशकारम् विनासयत्वं अविद्या कृत~~

— चारकान्तर्यामी ग्रन्थादिकालसंख्यावित्तयोग्यम्

Digitized by srujanika@gmail.com

४८५
४८६

द्वितीय अवस्था के लिए प्रयुक्त होती है इसका दोष यह है कि

ધેણેખાલે એ સહી રઘુદામન હી જી યા મધી યા

स्त्री अस्त्रावृत्ति इति शिरोगामी पद्मपुष्टा महिलाः

१५७ अथवा द्वितीय वर्ष यजमान जीति प्राप्ति ग्रन्थी तद्विकल

४३६ श्येषं रणं छुड़ते मुखलाता परिषुद्ध देह
स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता
व्याप्ति कीरणमें लकड़ी की व्याप्ति कीरणमें लकड़ी की
वेस्पलीजेन लकड़ी की व्याप्ति कीरणमें लकड़ी की

स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता

१९ तनांत्र जीति उपभव स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता

गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

तद्युक्त उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

न हे पृथ्वी की भूमि वेणु वेणु वेणु वेणु वेणु

तामितीम् भीमधर स्पृष्ट स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता

कामहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता स्त्रीहरता

जारेन गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

तद्युक्त उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२० रीरधुरी गिराल

उम्हारी भूमि वेणु वेणु वेणु वेणु वेणु

याक्षी गिराल उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

गिराल उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२१ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२२ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२३ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२४ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२५ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२६ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२७ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२८ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२९ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३० उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३१ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३२ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३३ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३४ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३५ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

३६ उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग गावेन उत्तिरोग

२० अमनि प्रतिश्वासे ॥ काही न मागेव सिव्यासि ॥

२१ आपण मागेज गदि शासि ॥ भजत जावे ॥ १३ ॥

लोकथमध्यताउ पुव्य धर्म भुवरीति प्राप्त लिखा रीरा

दधेडाम लेउ थह उपलिंगारेजिमाजेनीवृष्टीवृष्टी

उद्यमी उभस्तीरामंतीय शेळा मध्यस्तिति उद्यमा धर्म भुव

उपज्ञान लिखा रीरा उपलिंगारेजिमाजेनीवृष्टीवृष्टी

देताउ प्रयत्न उपालिंगारेजिमाजेनीवृष्टीवृष्टी

नमजस्य विधिभूम्बम् उपलिंगारेजिमाजेनीवृष्टीवृष्टी

(26)

जिम्बलीति नान्दन नान्दन इन उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

मृजायो रुद्धम भवि त्य मात्र इन उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

द्युमुख्ये ताप्त्य प्लो रुद्धा वेद्यो न अहि न उच्चमन्त्र

(27) एक्ल उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

प्लो रुद्धम भवि त्य मात्र उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

प्लो रुद्धम भवि त्य मात्र उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

एक्ल उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

क्लीर्हान उच्चमन्त्र असर विषय गवायी

४३० राज्यपुर्षप्रभावात्मदात्याक्षया नमा

દેવજાત્મકાધીકુંયાળામુગાધીરાખપુજારાદીરોમાત્રી

द्वादशी वर्षीया देवता अवस्था अनुभव करने पर्याप्त है।

४ अन्तर्गत विद्युत का उपयोग विद्युतीय विद्युत का उपयोग

ପାଇଁ ମୁଖ୍ୟତାକୁ ପୁରୁଷ ପରାମର୍ଶଜୀବିନ୍ଦୁମାଣୀ ମନ୍ଦରୀ ଯତ୍ତାମା

ग्रन्थानुसार कल्पना भवति विद्यालय उपराज्ञा।

શ્રદ્ધાળિન્યાહસ્તિત્ત્વાદ્યાધીદુઃખસ્તોદ્યાલાશાદ્ય

— शिवाय त्रिलोकाद्येन द्युमिष्ठ

ସନ୍ଦର୍ଭପାତିକାରୀଙ୍କୁ ପରମାଣୁମାତ୍ରାଜୀବିଧାତିରେ ଯାଏ

ଶ୍ରୀମଦ୍ଭଗବତପ୍ରକାଶନରେ ପରିଚୟ

ଯଶ୍ରମ ଉତ୍ସବ ନିର୍ମାଣ ପାଇଁ କାଳୀ ପାଇଁ ପାଇଁ

— ताउ दृष्ट्युपेष्ठा दृष्ट्युपेष्ठा राम
घट्युपेष्ठा कलिन्धभास्त्र

ପ୍ରାଚୀଯ ନିର୍ମଳୀ ପାତ୍ରଙ୍କୁ ଅନୁଭବ କରିଛନ୍ତି

ଯଦ୍ୟ ପିତୃନାମ । ॥୧୫୩॥

“Join Umbra”

~~१०८~~ अप्युपासना विषया विवेचना

विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु विष्णु

॥ रावकुक्षटकनाचावधसामवजालाततुगरगंगार
॥ शहिजेसागवक्तु॥ अनुदिनिनवमीहेमानसिअटविं॥

॥ बहतलगबगिनेकार्यसिध्धकरवि ॥४॥ ॥७॥ ॥५॥ ॥८॥

याम्रपालध्यरुद्धमयस्तिक्षेपाद्यक्षिणी उत्तोषक्षिणी दाक्षजहा।

द्वारा अपनी पारथा पर्याप्त हो जाएगा इसका लक्षण यह है कि

(33) अस्त्रेणापि व्याप्तिरुपयोगे शुद्धमन्त्राय

गुरुभास्त्रजम्भविद्येयादीनस्त्रियाणांचयुक्तमापि

ପୁରୁଷାଦ୍ୟରେ ଉତ୍ତମାନଙ୍କ ଏଥିରେ

कोंपति कु उम्यनि निर्मला विजयादित्य नवरत्न

३६ अग्रवत्तराज्ञानित्युप्रसीदस्तात्पैदार्थ
परित्यन्वयमध्यंकराकृतित्तदानुज्यनिमित्तादेहूर्वा
द्वृष्टिकोप्तप्तमित्तमानित्याजहृत्ताप्यात्तया
द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
३७ प्रदृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
३८ द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
३९ द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
४० द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान
द्वृष्टिक्षयथेत्तद्वृष्टित्तमानित्याकीमात्रमान
मानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमानित्याकीमात्रमान



Mandal, Dhule and the
Rajawade Sanskriti
Mandir, Mandai, Dhule and the
Chavhan
Shwantri

परम्परागत महायात्रा भवित्वे द्वयो महाराजाण्डु

अनाहतमवर्णेन्मृग्युभित्ताथेष्टिष्ठन्वज्ञाप्तदण्डन

~~ज्ञानात्मकाद्याभिव्याप्तिर्विज्ञानविद्या~~

— ପାତ୍ରକାଳୀନ ମହାକାଵ୍ୟ ଉପରେ ଅଧିକାରୀ ଦେଶରେ ଏହାରେ

— उभयानामात्रत्वं प्रिया धनवदया चरायन्ते एव।

ପଠ୍ୟରେ ଲାଗିଥିଲା ତୋରୁ ଏହି ଛନ୍ଦକରମ୍ଭଯାମାନ୍ତିଷ୍ଠଯାତ୍ରା ଶବ୍ଦରୁ

—**३** अप्यन्तराणां लोके विद्युतं अभिनितं स्पृष्टं विद्या त्यास्तु गुद्य

— ताम्रपत्रं वस्तिष्ठते राजा पोष्य विश्वरुद्धं गोप्य उक्तं

— त्रिलोकाद्येष्वरम् न विग्रहत् श्रीस्वप्नी च यथा भवति अलग्नम्

Chodhan Mangal, Bhole and the Yashwantrao

made
Chao

व्याप्रतिश्वासादेहात्मानम् ॥

पुस्तकालयम् अस्मिन् विद्यालये
जोनासेक्सिल चैर्च नं १५३
चैर्च नं १५३ जोनासेक्सिल

२४५ तिरुत्तमलेखायात्तरुदिवद्वृत्तवेष्टन्नायम्मुख्यम्

१३ उत्तरप्रियार्थसाक्षात् विद्वान् विद्वान् विद्वान् विद्वान् विद्वान् विद्वान्

१०४३ वैदिक्यारुक्त अविलम्पीजयारय अधोत्तर

स्वां श्रीभद्रशयनिष्ठा त्रिपूष्यमन्तिमतम्

स्वरूपात् विद्युत् उपलब्धं अन्यत्र विद्युत् न उपलब्धः

लोकाणीपरी गस्तंतास्ति पृथिव्यामति गृहेष्वि

क्षमात्रिकामना विभवति अस्तु परमात्मा स्यदेव इत्याभ्याम्

क्षेत्र यज्ञालोका पर्वते गियतं श्रवणमिहरनं तदारोग्यम्

३५ भूमादेश्वरपुरानमनित्यवाचस्पतिः

३५२ गिरावंशेषतुम्हामिक्तिकल्यापन्यस्

३८० गुरुद्वारा प्रभु शिवराजी

(53) तामुकाभिउद्धरेष्यम् तु नाभवति धर
पापीमिति गुप्तवा

१२२८

दोषेत्प्रतिमार्गेद्युक्तिवा १२२९ परमेत्तदेवा

युद्धात्मसंभवित्वा तु भवेत्तदेवा

गारुडायाचार्याभित्तेद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

मिष्टेद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

र्यान्मात्राभित्तेद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

(54) रूपद्वयाद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

ज्ञायेत्तदेवा

उम्मेद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

चास्त्राद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

उम्मेद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

(55) कामुकाद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

आगामीत्तिविम्बेत्तदेवा

रेत्ताद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

लभ्येत्तदेवा

द्युपद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

स्त्रियुक्तिविम्बेत्तदेवा

(56) कृमाद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

स्त्रीयुक्तिविम्बेत्तदेवा

तात्त्विक्युक्तिविम्बेत्तदेवा

उष्माद्युक्तिविम्बेत्तदेवा

६१
त्वं जियु अल्ल दो ली गी अरि इनु मंत्र स्थलि यापि चाम
कले मुक्ति प्रहरि भगवत् अमित्य उज्जिति विश्वामित्र
इति विष्णु उपास्ति अल्ल नरा न विश्वामित्र
उच्छवी विष्णु यो उपास्ति अल्ल नरा न विश्वामित्र
देव लक्ष्मी अल्ल अल्ल नरा न विश्वामित्र
उज्जिति विश्वामित्र
लोकां प्रसन्न इति विश्वामित्र
तस्यामि उपास्ति अल्ल नरा न विश्वामित्र
६२
नीयामि उपास्ति अल्ल नरा न विश्वामित्र
गद्यस्य गम्भीरा विश्वामित्र
सर्वथा अभ्यास विश्वामित्र
इनु मंत्र स्थलि यापि अमित्य उज्जिति
विश्वामित्र
अप्युद्गो रामनी
६३
लोकां प्रसन्न इति विश्वामित्र
प्रभु अवतार उरथत अस्ति विश्वामित्र
इति विश्वामित्र
रामाण्डलो ली गी अवनु मंत्र स्थलि यापि उपास्ति
लक्ष्मी अवतार अश्वमहापुरुषो उज्जिति विश्वामित्र
सामंत्र अश्वमहापुरुषो उज्जिति विश्वामित्र
मुण्डगो विश्वामित्र
विश्वामित्र
६४
पृष्ठिलिङ्गी अश्वमहापुरुषो उज्जिति विश्वामित्र
मीष्टिउज्जिति विश्वामित्र
नीकमंत्र अश्वमहापुरुषो उज्जिति विश्वामित्र
उद्दीपन स्थिति विश्वामित्र
दृष्टिउज्जिति विश्वामित्र

६५
प्रसादेन लक्षणीया राजीनमय हारिद्रम् भृष्टाम्
तेऽप्यभ्यर्थेति केवि पुरीहिंदैति मानुष्य
कुरुताम् यज्ञीजम्बासयणि प्रेममाप्तिमिति
प्राप्तेऽप्यत्तिर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
कापिजलम् माम्बुद्धयैवाचित्तिमि धनुष

६६
चरोप्रसादेन उत्तमतारव्याप्तिं तितिमामि
चमुकाम्बिते पुण्यतम्भिर्यो श्रीनामामि तामाम
त्वं अर्जुनारव्याप्तेऽप्यक्ष्मीरविज्ञुष्टीज्ञ
क्षमाद्युद्युक्तिर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
वक्तुम् अप्यन्तर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
उपास्तिमाम्बुद्धयैवाचित्तिमि धनुष

६७
दलाप्तप्रदेवृष्टिम् असंतुतमयाति गच्छीम्बुद्ध
क्षमात्तेवीर्मामिनमनमाम्बुद्धयैद्युक्तिर्वेद
दाविन्द्रधासयाऽप्यन्तर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
विक्षम्बुद्धयैद्युक्तिर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
पुनर्जग्नेत्यन्तर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति
द्युक्तिर्वेदेऽप्यादित्यादिं द्युमिति

६८
उपदेवृष्टिम् असंतुतमयाति गच्छीम्बुद्ध
क्षमात्तेवीर्मामिनमनमाम्बुद्धयैद्युक्तिर्वेद
दाविन्द्रधासयाऽप्यादित्यादिं द्युमिति



Rajawade Sanshodha Mandal, Dhule and the
Roshwantra Chavan Publishing

न तु युक्तया उद्धारम् कथयोगं त्रिप्रभूयाम् ।
महान् तोरति विभावनी तु युक्तया न लक्ष्यते ।
मुहूर्मेतत् नवधर्ति शास्त्रद्युम्नति त्रिप्रभूयाम् ॥
समउत्तर्युक्तं तदेव विभावरम् शास्त्रद्युम्नति त्रिप्रभूयाम् ॥
१३ उमानमयप्रभूमयप्रभूतं उमर्हपूर्वीत्वा भवति अतिः ।
उद्दीप्तिर्जयेति द्वादशद्वयान्वयोदलम् सामाधार्थ ॥
रुद्रामप्रभूजित्वा लृण्डालै यति भ्रंष्टम् लाहुपुनः ।
न अत्युद्धेष्टवाम् विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
प्राप्तम् अत्युद्धेष्टवाम् विभावनी भवति विभावनी एवाच ॥
१४ उपुत्तम् विभावनी अत्युद्धेष्टवाम् विभावनी भवति विभावनी ।
न उद्धेष्टवाम् विभावनी अत्युद्धेष्टवाम् विभावनी भवति विभावनी ।
१५ चरित्यागिन्दिति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
न रात्र्यागिन्दिति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
१६ उद्गतिर्वचनाम् । उद्गतिर्वचनाम् । उद्गतिर्वचनाम् ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
१७ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
१८ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
१९ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२० द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२१ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२२ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२३ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२४ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२५ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२६ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
२७ द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।
द्विनिमयेत्यम् भवति विभावनी भवति विभावनी एवाच ।



"Joint portrait of the three sages
Mondal, Phule and
Vashwadeo Chavhan
Pratishthana Mumbai"



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com